छोड़ो अंधविश्वास

गुरदीप सिंह दुआ
तकनीशियन - प्रथम

मम्मी को जब हिचकी आई,
बोली, किसी ने याद किया.
यह तो अंधविश्वास है, मम्मी,
मैंने झट प्रतिवाद किया.
सुबह-सुबह आँगन में आ कर,
कांव-कांव जब कौआ बोला.
चाची बोली आज हमारे
घर मेहमान है आने वाला.
कोई न आया शाम तलक,
तो चाची को मैंने समझाया.
अब छोड़ो यह अंधविश्वास,
इस ने सब को है भरमाया.
ज्यों ही पापा घर से निकले,
बिल्ली रास्ता काट गयी.
एक कदम आगे न बढ़ाना,
दादी आ कर डांट गई,
छींक आ गयी पापा को तो,
दादी ने फौरन टोका.
अब तो अशुभ और हो गया,
उन को जाने से रोका.
पापा बोले, नहीं मानता,
ऐसे अंधविश्वास को.
उसी वक्त वह गये वहाँ से,
सकुशल लौटे रात को ।